विश्वविद्यालय में दो–दिवसीय उद्यानिकी एवं औषधीय खेती पर सफल प्रशिक्षण आयोजन

पंतनगर। 25 फरवरी 2026। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के कृषि संचार विभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से वित्तपोषित जनजातीय उप योजना के अंतर्गत 23–24 फरवरी 2026 को 'उद्यानिकी एवं औषधीय पौधों की खेती को आजीविका संवर्धन हेतु प्रोत्साहन' विषय पर दो–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विकासखंड सितारगंज के ग्राम घुसरी की अनुसूचित जनजाति की महिलाओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जनजातीय महिलाओं को उद्यानिकी एवं औषधीय पौधों की वैज्ञानिक खेती, पौध तैयार करने की विधि, रोपण तकनीक, पोषण प्रबंधन, कीट एवं रोग नियंत्रण, कटाई उपरांत प्रबंधन तथा विपणन संबंधी जानकारी प्रदान करना था, ताकि उनकी आय में स्थायी वृद्धि सुनिश्चित की जा सके।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक श्री गोविन्द सिंह राणा रहे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि औषधीय एवं उद्यानिकी फसलों की खेती ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार का सशक्त माध्यम बन सकती है। उन्होंने महिलाओं को आधुनिक तकनीकों को अपनाकर आत्मनिर्भर बनने का आह्वान किया तथा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित इस पहल की सराहना की। कार्यक्रम का आयोजन एवं संचालन जनजातीय उप योजना की प्रधान अन्वेषक डा. अर्पिता शर्मा कंडपाल के निर्देशन में किया गया। उन्होंने प्रशिक्षण की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि इस कार्यक्रम के माध्यम से महिलाओं को औषधीय पौधों की पहचान, उनकी उपयोगिता, बाजार की संभावनाएँ तथा मूल्य संवर्धन की जानकारी दी गई। उन्होंने कहा कि जनजातीय उप योजना का उद्देश्य अनुसूचित जनजाति समुदाय की महिलाओं को तकनीकी ज्ञान एवं कौशल प्रदान कर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है।

प्रशिक्षण के दौरान सैद्धांतिक सत्रों के साथ–साथ व्यावहारिक प्रदर्शन भी आयोजित किए गए, जिनमें प्रतिभागियों को पौधारोपण, नर्सरी प्रबंधन तथा जैविक तरीकों से खेती करने की जानकारी दी गई। विशेषज्ञों ने कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त करने की तकनीकों पर विशेष जोर दिया। कार्यक्रम में हेमा तिवारी एवं गंगा पांडेय का विशेष सहयोग रहा। उन्होंने प्रशिक्षण की व्यवस्थाओं तथा प्रतिभागियों के मार्गदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दो–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि उन्हें इस प्रशिक्षण से नई जानकारी एवं आत्मविश्वास प्राप्त हुआ है, जिससे वे अपने गाँव में उद्यानिकी एवं औषधीय पौधों की खेती प्रारंभ कर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकेंगी। अंत में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम जनजातीय महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में एक सराहनीय एवं प्रभावी पहल सिद्ध हुआ।